रूड़की की शान - गंग नहर

सतीश कुमार कश्यप
संदेशवाहक (वरिष्ठ ग्रेड)
वित्त अनुभाग
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान ,रूड़की

हरिद्वार से रूड़की तक गंगा नहर के निर्माण कार्या विशेषकर सोलानी एक्वाडक्ट सिविल इंजीनियरिंग के करिश्मे के रूप में पिछले 150 सालों से दुनिया भर के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है, 1847 में भारत के गर्वनर जनरल लार्ड हार्डिग्स सोलानी एक्वाडक्ट और गंगा नहर के निर्माण कार्य देखने आये ।

ज्वालापुर से रूड़की तक गंगा नहर से चार नदियाँ पार की हैं , रानीपुर में गंगानहर बरसाती नदी के ऊपर से बहती है , धनौरी गंग नहर रतमऊ नदी के पानी से बराबर स्तर पर मिलना व बिना किसी बाहरी साधन के उतने ही पानी का अलग हो जाना एक आश्चर्य है , रूड़की में सोलानी नदी के ऊपर गंगा नहर की अथाह जलराशि सोलानी नदी के ऊपर से गुजरती है ।

रूड़की से हरिद्वार की ओर लगभग 5 कि.मी. तक नहर लगभग 30 फीट ऊँचे बंधे पर बनी है । इस बंधे की रक्षा के प्रतीक दो शेर इन सीढ़ीयों के दोनों सिरों पर बने हैं दो शेर रूड़की में बी.टी.गंज के निकट और दो शेर मेहवड़ कलाँ के पुल के पास बने हैं । इन शेरों को बनाने का अर्थ नहर के इस भाग के खतरे से जनता को अवगत कराना था । नहर का सारा निर्माण कार्य, ईंट, चूने व सुरखी में हुआ है ।

प्रारम्भ में सोलानी एक्वाडक्ट के बीचों-बीच नहर के प्रवाह को दो भाग में बाँटने के लिए एक बहुत चौडी दीवार बनाई गई थी । इसकी लम्बाई पुल की लम्बाई के बराबर थी और चौड़ाई इतनी कि एक चारपाई आराम से बिछाई जा सके । इस दीवार को बनाने का उद्देश्य यह था कि सोलानी के पुल की मरम्मत की आवश्यकता होने पर आधे पुल के पानी को बन्द किया जा सकता है जब 70 वर्ष तक पुल को किसी मरम्मत की जरूरत नहीं पड़ी तो इस दीवार के कारण जल प्रवाह में आई रूकावट को दूर करने के उद्देश्य से वर्ष 1929 में तुड़वा दिया गया। नहर के बन्द होने के समय इस दीवार की नींव को अभी भी देखा जा सकता है ।

सन् 1946 तक इस नहर का उपयोग बड़ी-बड़ी नौकाओं द्वारा सामान को लाने-ले-जाने के लिए भी होता रहा ।

****